मानवता की ओर

अशोक मानव

मानव समाज जातिवाद सम्प्रदाय व भाषावाद की जंजीर में जकड़ता जा रहा है। यह संकीर्णता धर्म नहीं हैं यह धर्म का विकृत रूप हैं यदि यह इस तरह आगे बढ़ता रहेगा तो समाज से मानवता का अन्त हो जायेगा। मानवता की रक्षा के लिए समाज के अन्दर बढ़ रहे इस विष को रोकने के लिए एकता का हाथ आगे बढ़ायें ओर इस बुराई के कारण को निकाल कर बाहर फेंक दें।

प्रकृति में मानव समाज एक जाति है मानव समाज में वर्ग होता है, जो मानव समाज की आवश्यकता हैं जाति कुछ लोगों द्वारा थोपी मानवता की पीड़ा हैं प्रकृति व्यक्ति के अगले जीवन का निर्धारण गुण के आधार पर करती हैं जाति के आधार पर नहीं। फिर ऐसी मान्यता से क्या लाभ जिसका कोई प्राकृतिक मूल्य न हो? जाति मानवता की एक बाधा है इसलिए जनता को निकाल कर फेंक देना चाहिए।

मानव जीवन सम्प्रदाय का अखाड़ा बनता जा रहा है। अपने धर्म की रक्षा व प्रचार के लिए अलग–अलग सम्प्रदाय बनते जा रहे हैं यह विद्रोह हैं धर्म का विद्रोह नहीं। धर्म तो वह है जो चल रहा है और जो हमेशा चलता रहेगा। यह है प्रक1ति का वह नियम है जो स्वतः चल रहा है जिसमें अन्तिम सत्य सूर्य और जल है, जिससे प्रकृति का निर्माण होता हैं इसके अतिरिक्त मानव समाज में महान पुरूष पैदा होते रहते हैं जो मानवता की रक्षा के लिए महान कार्य करते हैं, भविष्य में जिसकी पूजा होने लगती है आज भी ऐसे महान पुरूष की जरूरत है आप बस महान बन कर मानवता की रक्षा करें।

भाषा मानव समाज की अभिव्यक्ति है जिससे वह अपने भाव व्यक्त करता है। जीवन का विवाद भाषा नहीं भाव है। मानवता के लिए भाव अच्छे होने चाहिए। भाषा कुछ भी हो। मानव समाज द्वारा अनेंको भाषा बोली जाती हैं। सभी भाषा के प्रति व्यक्ति का शुभ भाव होना चाहिए। एक पूर्ण राष्ट्र की आवश्यकता के लिए एक राष्ट्रीय भाषा का प्रयोग करना चाहिए। जिससे राष्ट्र के अन्दर व्यवसायी बनाने में असुविधा न हो। इस व्यवस्था में एक राष्ट्र का व्यक्ति कहीं जाकर बात कर सकेगा। अर्न्तराष्ट्रीय भाषा का चुनाव कर लेना चाहिए जिससे व्यक्ति पृथ्वी के किसी कोने पर जायें उसे बात करने में कोई परेशानी न हो। इस प्रकार एक व्यक्ति को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय भाषा का ज्ञान होना चाहिए। अपनी–अपनी भाषा को आगे करने की लड़ाई खत्म करके एक भाषा को अपना लेना चाहिए। उपरोक्त विषय पर विचार करके मानवता के कदम को आगे बढ़ायें । यही सार्थक जीवन है, जो सत्य प्रकृति की एक आवाज है।❐

भूत प्रेत तो सिर्फ प्राकृतिक प्रतिक्रिया है जो अज्ञानी कमजोर मानव को डराता है। ईश्वर हर व्यक्ति का है सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं। उस पर सबका बराबर का अधिकार है।